

सत्य साहित्य

वर्ष 10/ अंक 1
अक्टूबर 2026
Year 10/ No. 1
October 2026

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

भजन

- ‘उम बिना छिरती नहीं’ है, माला हरि के नाम की
 (1) लंका जीत के लौट आये, आये अयोध्या धाम में
 है रही हनुमान जी के, माला गले की जानकी ।
 ‘उम बिना ---’
- (2) मनका मनका लोड़ लैंका, उस योधा हनुमान ने
 जिस माला में राम नहीं है, वो माला किस नाम की
 ‘उम बिना ---’
- (3) चौर के मीना उपपन्न, दिखवाया उस योधा हनुमान ने
 आगे आगे राम राजा, साथ माला जानकी ”
 ‘उम बिना ---’

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

सेवकपन ऊँचा दर्शाते, कवि कथा यह ऐसे बताते।
 माला को हनुमत् ने तोड़ा, मनका ले मलमल कर फोड़ा ॥52॥
 वस्तु आप जो इन में चाहो, है वह क्या यह मुझे बताओ।
 राम नाम, वह बोला, चाहूँ, सो वस्तु मैं इन में न पाऊँ ॥57॥

Reference: Swamiji, Ramayansar, pp. 584

इस अंक में पढ़िए

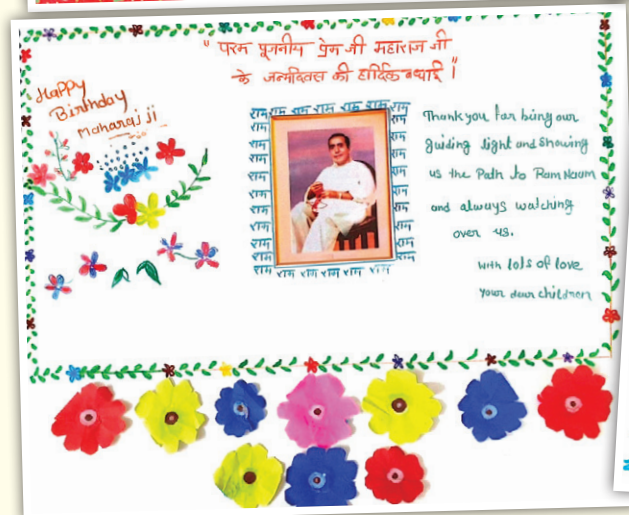
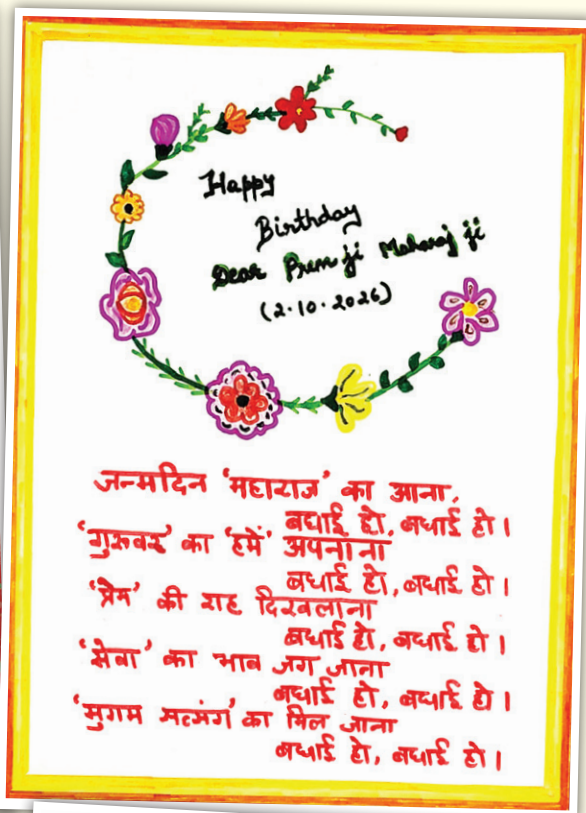
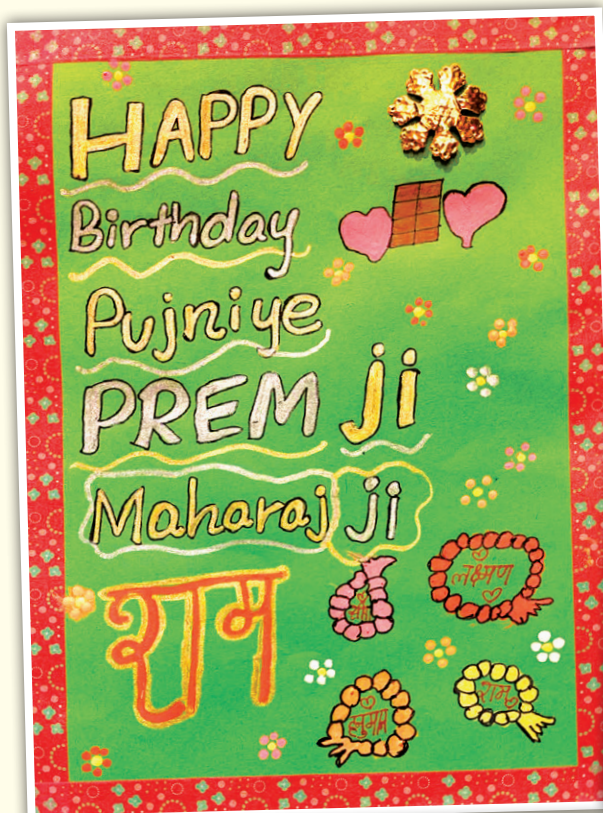
- भजन
- बधाई
- Kaamna Kamal Kunj
- परमेश्वर की लीला
- प्रेम अर्थात् परमात्मा की भक्ति
- श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण – सुजानपुर
- आप बीती
- बच्चों के लिए
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹5



बधाई



Kaamna Kamal Kunj

सत्यानन्द

Out of hostility, my adversaries oppose me in many different ways. Obstinate refusing to accept the truth, they create one obstacle after another in their anger. (1)

They inflict many types of pain and insult me excessively. Consumed by ever-growing jealousy, they lose all sense of what is right and what is wrong. (2)

Yet I wish only for their welfare. If only I could play the sweet notes of Lord Ram's Name upon the flute of my throat and let them hear that melodious divine music. (3)

Locked in a fierce ideological struggle, scholars draw the bow taut and shoot the arrows of their own doctrines. They quarrel over mere names while concealing the actual reality. (1)

Instead, I would sit among them, playing the flute of devotion. I would tell them that Ram is the Nameless One, the formless essence of ultimate good. (2)

The one Reality, whose very nature is Truth, is known by many names. Though different regions call it by different names, the Reality itself always remains one. (3)

In the midst of the powerful, I would stand fearlessly with outstretched arms and proclaim that devotion is the true religion and that the Name of Ram is its very essence. (1)

Wherever the fire of hatred may rage, I would remain calm and composed, quenching it with the nectar of the Divine



Name. (1)

Going even among the atheists, I would raise my voice to its highest pitch and proclaim that Ram is the Abode of Bliss, the Destroyer of sin and suffering. (1)

Sensing the deep, agonizing torment born of spiritual separation within a person, I would immerse him in the celestial river of Ram's Name. (1)

Whenever I see people afflicted by suffering, illness, or grief, I would give them the medicine of the nectar-like Divine Name until they are fully nourished by it. (1)

I would go to those surrounded by adversity and distress, and there kindle the lamp of the sacred mantra of Ram's Name. (1)

Remaining steadfast in the face of the gravest calamities, keeping my heart firm in times of crisis, and maintaining courage even in the agony of death, I would continue to calmly chant the Divine Name. (1)

Whether people speak well of me or ill, I would inwardly remain joyful, relishing the nectar of the Divine Name. (1)

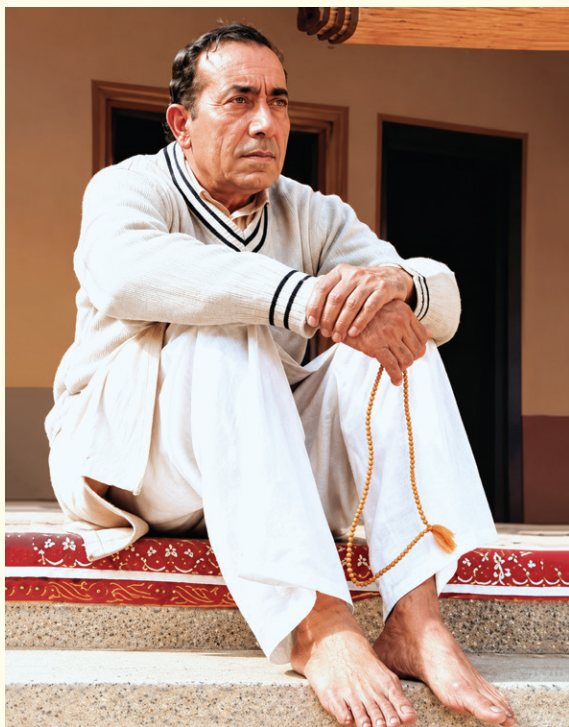
Day and night alike, abandoning all argument and dispute, I would remain absorbed in the Divine Name and continually savour its sweetness. (1)

Oh, may I attain such a state, where in all the ten directions and every quarter, I hear the unbroken melody of the blessed Name of Ram resounding without cease. (1)

(Shree Bhakti Prakash P. 38-40) ■

परमेश्वर की लीला

प्रेम



परमेश्वर के नाम में प्रीति पैदा करने के लिये राम नाम का हर समय आराधन करना है। जो कोई चीज़ अच्छी देखें, परमेश्वर की लीला समझ कर उसी का सिमरन करना चाहिए। यदि कोई फुलवारी, नदी, चंद्रमा को देखें, तो उसी में लीला देख कर परमेश्वर को याद करें। उस से प्रीति पैदा होती है। इसी प्रकार कोई साथी, मित्र, बन्धु मिले, तो कहें कि परमेश्वर तेरी अपार कृपा है जो तूने संगी मिलाप प्रदान किया है। इसी प्रकार आस पास के लोगों को देख कर भी धन्यवाद करना चाहिए कि कितने अच्छे पड़ोसी, अच्छे साथी हैं और यह सब तेरी ही कृपा है। तेरी कृपा के बिना यह सुख प्राप्त नहीं हो सकता। यदि कारण वश कोई दुःख आ भी जाए तो, इसमें भी घबराएँ नहीं बल्कि प्रार्थना करें आशीर्वाद माँगें। आपको विश्वास हो कि वह खुद ही संभाल लेगा एवं विघ्न टल

ही जायेगा और ऐसा विश्वास होना चाहिए। अपने कर्तव्यों का पालन करते रहना चाहिए। वह स्वयं ही कृपा कर देगा। यह जो समय आया है वह कट जाएगा, इससे घबराना नहीं, डाँवाडोल नहीं होना। उससे कुछ बनता नहीं। यह विश्वास की कमी है। परमेश्वर तो मेरे अंग-संग है फिर किस चीज़ का भय?

परन्तु जब हम परमेश्वर की कृपा माँगते हैं, मन में स्थिरता बनी रहती है। डाँवाडोल नहीं होना। दुःख आते हैं, चले जाते हैं किसी बहन के भाई मर गए, कहने लगे कि दुःख इतना आया परन्तु कट गया।

महाराज कलकत्ता गए थे। जिसके पास ठहरना था उसका लड़का मर गया तो महाराज अफ़सोस करने लगे। सेठजी ने बात टाल दी। चाय पर बैठे – तो सेठजी कहने लगे कि महाराज यह सब आपकी कृपा है—आपके ग्रन्थों की कृपा है। मुझे इतना धैर्य दिया है, स्थिरता दी है कि मैं डोला नहीं। यह तो विधाता का विधान है। कोई क्या कर सकता है!

हर समय परमेश्वर को पास समझ कर अपने कर्तव्यों का पालन करें, लीला को देखें और सराहें। उससे विश्वास बढ़ता ही जाएगा। हर में परमेश्वर को देखकर प्रीति करना। कोई बुरा भी कहे तो बुरा नहीं मानना, परमेश्वर को सामने रखकर परमेश्वर को अपने संकट लखना सबसे उत्तम साधन है।

परमेश्वर तेरी महान् शक्ति है। यह सब तेरी ही कृपा की करनी है जो यह विश्वास हुआ है। तेरी कृपा के बिना सब नीरस है। परमेश्वर तू कृपा कर कि हर समय हम तुम्हें ही देखें, घबराएँ नहीं और इसे भी तेरी ही कृपा जानकर स्वीकार करें।

परमेश्वर श्री राम तेरी कृपा हो, कृपा हो।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुख वाक्य, 30.03.69 परम पूजनीय श्री महाराज जी की डोंयरी से) ■

प्रेम अर्थात् परमात्मा की भक्ति

१२५१/७१

जिन से आशम, विप्रम तथा प्रेम मिले - वह राम ! जीवन में आ-राम :
राम का आशमन है आशम ! जिनके आशमन से संसार रूपा मिल, विप्रम
का मिल मिलेला, न रहकर विप्रम बन जाये - वह राम ! आशमन
कैसे हो ? प्रेम से राम प्रकट होते हैं ! प्रेम क्या है ? जो "मैं" को
जैसे करे, वे वह प्रेम ! जिसके "मैं" जैसे हो जाये वह प्रेम !
जिन प्रेम किये, तिन ही प्रेम पाये।



सम्बंधित समस्याएँ हैं, सो इन्हीं सब चीज़ों में
फँसा हुआ है। व्यक्ति तरह-तरह की कामनाएँ
पूर्ण करने में लगा हुआ है, तरह-तरह की
एषनाएँ यशमान की प्राप्ति में ही अपना सब
कुछ समझ रहा है। जैसे कि यही सब कुछ
है, यही जीवन की उपलब्धि है। स्वामी जी
महाराज फरमाते हैं, "इन सबके लिए मेरे पास
एक ही समाधान है वह यह कि इन सबको
हाथ जोड़ कर कहूँ, कि मेरी तरह आप भी राम
राम जपो, परमात्मा का स्मरण करो, सब कुछ
ठीक होगा। यूँ कहिएगा राम नाम की उपासना
करने के बाद यह हृदय प्रेम से आप्लावित हो
जाता है, दिव्य प्रेम से भर जाता है। यह राम
नाम का प्रताप है, यह राम नाम की महिमा है,
यह राम नाम जप की उपलब्धि है। भीतर से
जितनी भी ज्वालाएँ हैं वे शांत होनी चाहिएं और
उन्हें शांत करने वाला है एक ही शब्द जिसे प्रेम
कहा जाता है।"

अनेक रूप हैं इसके, संतोष भी इसे कहा जाता
है, शांति भी इसे ही कहा जाता है, आनंद
परमानन्द भी इसे ही कहा जाता है। जिसे
परमात्मा की भक्ति प्राप्त हो जाती है उसे सब
कुछ प्राप्त हो जाता है। प्रेम अर्थात् परमात्मा की

कोई मोह ममता के जाल में फँसा हुआ है
तो कोई अपनी समस्याओं के जंजाल में
जकड़ा हुआ है। कोई रोग से पीड़ित है, शरीर

भक्ति। परमात्मा तो एक है लेकिन यह जो इतने सारे परमात्मा के रूप बैठे हुए हैं, इनसे प्रेम करना भी परमात्मा की भक्ति है, यह असली भक्ति है। यह उस भक्ति से भी ऊँची भक्ति मानी जाती है।

सबसे प्रेम करना है इन

सब पर दया नहीं करनी है। दया तो परमात्मा करता है, कृपा परमात्मा करता है, हम तो प्रेम करते हैं और यही सीखने की चीज़ है, यही करने की चीज़ है। दया करने वाला व्यक्ति बड़ा हो जाता है। जिस पर दया की जाती है वह छोटा हो जाता है। हमें ऐसा कुछ नहीं करना। हमारे लिए सब बंधु हैं सब परमात्मा के पुत्र हैं, सब परमात्मा की संतान हैं, हमें उनको छोटा नहीं बनाना है। हमें उन्हें भी ऊपर उठाना है अतः प्रेम करना है दया नहीं करनी। दया करें परमात्मा, कृपा करें परमात्मा, करुणा करें परमात्मा। हमें तो एक दूसरे के साथ प्रेम करना है। हमें तो सबके साथ प्रेम करना है और प्रेम के नाते ही जो कोई हमें आवश्यकतावान दिखाई देता है उसकी आवश्यकता को पूरा करना है। एक ही आवश्यकता है मेरी। आप उस आवश्यकता के जितने मर्जी रूप मान लो किसी समस्या में भी आप अपनी आवश्यकता को project करते हो, प्रगट करते हो तो मैं समझता हूँ एक ही आवश्यकता है, आपको राम राम और जपने की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की, उस ज़रूरतमन्द की, इस ज़रूरत को पूरा कीजिएगा। आपका राम राम ठीक चल रहा है कि नहीं चल रहा। अरे भाई! सुख-दुःख तो आते ही रहेंगे समस्याएँ तो आती ही रहेंगी, आपका नाम जप ठीक से चल रहा है

प्रेम अर्थात् परमात्मा की भक्ति। परमात्मा तो एक है लेकिन यह जो इतने सारे परमात्मा के रूप बैठे हुए हैं, इनसे प्रेम करना भी परमात्मा की भक्ति है, यह असली भक्ति है। यह उस भक्ति से भी ऊँची भक्ति मानी जाती है

या नहीं चल रहा। जैसा कि स्वामी जी महाराज ने कहा है, वहाँ जा कर राम नाम की बाँसुरी बजा दो, सुना दो उन्हें। उन्हें बताओ कि अरे! मैं भी राम राम कर रहा हूँ, तू भी राम राम कर, इसी में ही सारी समस्याओं का

समाधान है। जब यह राम नाम गूँजता रहेगा तो समस्याएँ अपने आप सुलझती रहेंगी। न भी सुलझें समस्याएँ, चलती भी रहें पर राम नाम आपको बल देगा। उन समस्याओं का किस ढंग से डट कर मुकाबला करना है उसके लिए यह पर्याप्त है। इस प्रेम का व्यवहारिक स्वरूप क्या है कुछ एक उदाहरणों से देखते हैं।

एक आश्रम की घटना याद आती है। एक आश्रम के बाहर आकर एक कार खड़ी हुई है, एक परिवार नीचे उतरा है। एक व्यक्ति कुर्ता पायजामा डाले हुआ भागता-भागता गया है और जाकर उसने सामान उतरवाने में सहायता की है। उनका सामान उतरवाया है, उसके बाद जहाँ कहीं ऑफिस में जाना था उनको वह लेकर गया है। आइएगा ऑफिस में जहाँ रजिस्ट्रेशन होती है। वहाँ वे बताते हैं कि आपका इतना नंबर कमरा है, इतने नंबर कमरे में चले जाइएगा या इनका ये कमरा है वगैरह-वगैरह, उनका यह कमरा है। बड़ा परिवार था तो सामान काफ़ी था। उनके दो तीन कमरे बुक थे। हर एक के कमरे में उनका सामान पहुँचने के बाद सेठ साहब ने अपनी जेब से एक पचास रुपये का नोट निकाला और उस व्यक्ति को कहा, “ले भाई! चाय पानी पी लेना।” वह व्यक्ति हाथ जोड़ कर कहता है, “नहीं महाराज! इसकी कोई आवश्यकता नहीं,

परमात्मा का दिया हुआ बहुत है, मैं तो इसलिए आपके पास आपकी सेवा में हाज़िर हुआ था कि आप आए हो आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो। अपना कर्तव्य समझ कर तो आपकी सेवा करने के लिए, आपकी असुविधा को कम करने के लिए मैं आ गया था। इसकी आवश्यकता नहीं है।” सेठ साहब को लगा जैसे आम सेठ होते हैं कि शायद पचास रुपये कम हैं तो उन्होंने सौ रुपया देने की कोशिश की। उस व्यक्ति ने दुबारा मना किया, “मैंने अर्ज करी न मेरे प्रभु! मुझे इस चीज़ की आवश्यकता नहीं है। चाय पानी मुझे सब यहाँ से मिल जाता है।” “अरे नहीं भाई! ले भी लो न। मेहनत करी है तूने, सामान उठा कर इधर रखा है, हमारी सहायता करी है इत्यादि इत्यादि।” जब सेठ नहीं माना तो इस व्यक्ति ने हाथ जोड़कर के कहा, “महाराज! क्षमा करें, मैं यहाँ पर डॉक्टर हूँ, ये प्रेम है। मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं है, मैंने कर्तव्य समझ कर आपको अधिक असुविधा न हो तो आपकी असुविधा में हाथ बँटाया है मैंने कुछ और नहीं किया, ये प्रेम है।” कितना सुंदर रूप है इस प्रेम का, ऐसा प्रेम होना चाहिए।

आज स्कूल से छुट्टी हुई है, छुट्टी के बाद एक बलवान लड़का और एक शरारती लड़का एक कमज़ोर लड़के को छड़ी के साथ पीट रहे हैं, मारे जा रहे हैं उसे। तभी एक और दुबला पतला सुंदर सा लड़का आया है, उसने इस मारने वाले व्यक्ति से पूछा, “भाई! क्यों मार रहे हो इसे।” ऐसे पूछने के लिए बड़ी हिम्मत चाहिए। “तू मेरा क्या बिगाड़ लेगा” उस बलवान व्यक्ति ने कहा, “क्या करेगा तू पूछ कर?” ये दूसरा बालक जो आया है क्लासफेलो होगा, तीनों ही क्लासमेट्स हैं, कहा, “मैं कुछ कर तो नहीं सकता, आप बलवान हो आप चाहो तो मेरी भी

पिटार्ई कर सकते हो। मैं तो बहुत कमज़ोर हूँ, इसी की तरह जिसकी आप पिटार्ई कर रहे हो। हाँ मैं इतना कर सकता हूँ कि जितनी स्टिक्स आपने इसको मारनी हैं उसकी आधी मुझे मार लो और आधी उसे मार लो। उसका आधा बोझ, पिटार्ई का आधा भाग हल्का हो जाएगा।” यह सुन कर तो बलवान को बड़ी अजीब सी बात लगी। एक धक्का सा लगा, उसी वक्त अपनी छड़ी जो हाथ में थी उसको तोड़-फेंका और पश्चाताप करने लग गया। यह बालक जिसकी बात आपकी सेवा में की जा रही है वह कालान्तर में बहुत बड़ा कवि लॉर्ड बायरन बना है। यह प्रेम के चिन्ह हैं। यह कैसा सुंदर प्रेम है जो प्रगट भी होता है और अप्रकट भी रहता है — प्रेम चीज़ ही ऐसी है कि व्यक्ति दूसरों के काम आने लग जाता है। उसके अन्दर भारी उत्कण्ठा जागृत होती है। प्रेम के कारण ही मैं हर किसी के काम आऊँ, हर किसी की जिसकी मेरे से सहायता बन पाती है मैं करूँ। रोते हुए व्यक्ति के दो आँसुओं को आप दोनों हाथों से इस प्रकार पोंछ देते हो यह कोई छोटी बात नहीं है। इतनी सी बात को देख कर न जाने कितनी मात्रा में आपके दिए हुए प्रेम को प्राप्त कर लेता है। उस प्रेम से वह भीतर से कितना बलवान हो जाता है। ओह! कोई है जो आँसू भी पोंछ सकता है। आम तो सब रूलाने वाले ही मिलते हैं। सब हमें रोते हुआँ को और रुलाते हैं। कोई है जो हमारे आँसू भी इस प्रकार से पोंछ सकता है, यह प्रेम है। यह प्रेम आपके अंदर आएगा जब आप बहुत नाम की उपासना करोगे। यह नाम की कमाई का प्रताप है, प्रभाव है। यह प्रेम का संचार, प्रेम की भीतरी उत्पत्ति होनी और फिर वृद्धि होती रहनी चाहिए।

दो साधु किसी स्नान घर में स्नान करने के लिए गए हैं। कपड़े बाहर उतारे अपने, अन्दर

स्नान करने के लिए गए। जब तक स्नान करके बाहर निकले तो कपड़े नहीं थे। कोई चोर आया, चुरा कर ले गया कपड़े, बेचारे क्या करेंगे। उतारे तो इधर ही थे, इधर उधर देखा कपड़े मिले नहीं, दिखाई नहीं दिए। क्या करें? बेचारे कुछ नहीं कर सकते, बेचारे वैसे के वैसे ही खड़े हैं, इतनी देर में एक भागता-भागता व्यक्ति आया है, कहा, “ये आपके कपड़े हैं, मैं चोर हूँ, मैंने ये कपड़े चुरा लिए थे लेकर भाग रहा था जैसे ही मैं थोड़ी दूर तक गया मेरे ये हाथ काम करने बंद हो गए हैं। मेरे हाथ अब काम नहीं कर रहे। मेहरबानी करके, मुझे लगता है मेरे अपने किए की सज़ा का फल है यह, जो मैंने अपराध किया है आपके प्रति। यह उसी का फल है कि ये मेरे हाथ काम करने बंद हो गए हैं। एक हाथ काम कर रहा है, दायाँ हाथ बिलकुल हिलना जुलना बंद हो गया है।” संत महात्माओं ने, वहीं पर परमात्मा के नतमस्तक हो कर, उनको चरण वंदना प्रणाम कर के कहा, “परमात्मा! इतनी बड़ी ग़लती तो थी नहीं जितनी बड़ी सज़ा आपने दे दी।” यह प्रेम है।

हे परमात्मदेव! किससे बहस हो रही है, किसको बता रहा है यह व्यक्ति, यह साधु। किससे कह रहा है परमात्मा इतना बड़ा अपराध तो नहीं था जितनी बड़ी आपने सज़ा दे दी है। परमात्मा के घर में क्या अन्याय है, उसके घर क्या ग़लती है लेकिन प्रेम सब कुछ आपको कहने के योग्य बना देता है, अधिकार देता है प्रेम। परमात्मा, यूँ समझियेगा कि आपके वश में हो जाता है यह प्रेम के कारण, इसलिए उस साधक को छूट है जो कुछ भी कहना चाहे वह कहे। “परमात्मदेव! इसका अपराध बेचारे का इतना बड़ा तो नहीं था जितनी बड़ी आपने सज़ा दी है, मेहरबानी करके इसे माफ़ कीजिएगा।

परमात्मदेव! इसे माफ़ कीजिएगा, इस पर दया कीजिएगा, इस पर कृपा कीजिएगा, कोई भला आदमी है। देखो न! यह लेकर तो गया था, कोई ज़रूरतमंद होगा, नहीं तो हमारे इन कपड़ों की किसको ज़रूरत है। साधुओं के कपड़े कौन इस्तेमाल करना चाहता है। यह कपड़े कौन पहनना चाहता है, कोई भी नहीं। कोई कितना ज़रूरतमंद होगा जो यह कपड़े लेकर गया है। मेहरबानी करके इसे क्षमा करो।” क्षमा किया भी, क्षमा करवाया भी, कितना बड़ा काम प्रेम करवा रहा है। यह कौन करवाने वाला है? यह भीतर बैठा हुआ प्रेम, जो जागृत हुआ हुआ है, ‘दिव्य प्रेम’ वह आपसे इस प्रकार की बात करवा रहा है। इस बात की प्रार्थना करवा रहा है। कुछ न कर सको, कम से कम जिस किसी को मिलने के लिए जाओ, जिस किसी आवश्यकतावान् को देखो, जिस किसी दुःख से पीड़ित को देखो उसको इतना तो कह सकते हो, “भाई! राम राम जपो।” उसके लिए चुपचाप परमात्मा से प्रार्थना भी कर सकते हो। “परमात्मा! दुःख दर्द दूर करने के लिए तो मैं नहीं कहता यह तो इसके कर्मों का फल है इसको भुगतना ही होगा। मैं आपके किसी भी विधान में हस्तक्षेप नहीं कर रहा पर मैं इतनी प्रार्थना तो कर सकता हूँ, दुःख दर्द में भी इसका नाम स्मरण चलता रहे, यह तेरा नाम जपना न भूले।”

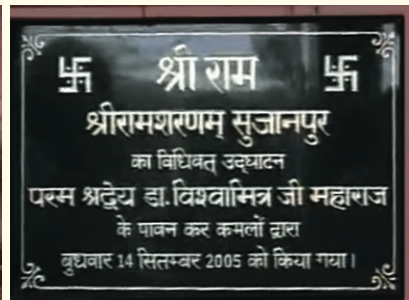
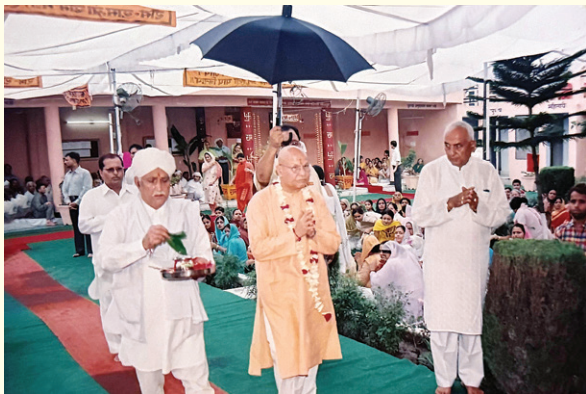
इससे इतना बल मिलता है, इतना उत्साह मिलता है मानो दुःख दर्द, आदमी अपने आप ही भूल जाता है। दुःख दर्द बहुत छोटा महसूस होने लग जाता है।

“सब सुख दाता राम है। दूसर नाहीं कोय।।”

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन 10.10.2008) ■

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : सुजानपुर

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)



श्रीरामशरणम् सुजानपुर जिला पठानकोट (पंजाब) में हिमाचल प्रदेश व जम्मू और कश्मीर के बॉर्डर पर स्थित है। सुजानपुर एक छोटा कस्बा है जो दो नहरों के बीच स्थित है। दोनों नहरें रावी नदी की सहायक हैं। हिमाचल प्रदेश व जम्मू-कश्मीर के बॉर्डर पर होने की वजह से रात व शाम में वातावरण सुहावना हो जाता है।

पूज्य श्री डॉ विश्वामित्र जी महाराज का निवास स्थान होने के कारण कई मीठी यादें इस स्थान से जुड़ी हुई हैं। बुजुर्ग पुरुष-महिलाएँ जिन्होंने उन्हें बचपन में प्यार दिया व उनके मित्र जो स्कूल में उनके साथ पढ़ते थे, सबका उनके साथ अति स्नेह था। बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण तथा परम पिता परमेश्वर के साथ लगाव होने के कारण वे सबके प्रिय थे। सुजानपुर छोड़ने के बाद भी सभी का स्नेह उनके साथ बना रहा। जब भी पूज्य महाराज श्री का सुजानपुर में आगमन होता था तो पूरे शहर में 'उत्सव' का

वातावरण हो जाता था। अभी भी जो साधक दूर-दूर से खुले सत्संग में आते हैं वे श्री महाराज जी के निवास स्थान, स्कूल व रामलीला क्लब के दर्शनार्थ हेतु जाकर प्रसन्नता अनुभव करते हैं।

AIIMS के बाद और मनाली में तपस्या के बाद परमेश्वर की प्रेरणा से पूजनीय महाराज श्री सुजानपुर अपने घर में श्री गीता जी पर प्रवचन, ध्यान की बैठक, भजन कीर्तन किया करते थे। पूज्य महाराज श्री द्वारा सुजानपुर 'श्रीरामशरणम्' बनने से पूर्व साधकों की प्रार्थना पर प्रतिदिन सुबह पठानकोट में 'ब्राह्मण सभा' में निरंतर प्रवचन होते रहे।

साधक भाई-बहनों की संख्या बढ़ने पर सुजानपुर में 'श्रीरामशरणम्' बनाने की प्रार्थना की गई और पूज्य महाराज श्री ने इसकी स्वीकृति दे दी। इस प्रकार गुरुजनों के आशीर्वाद से सुजानपुर के साधकों को श्रीरामशरणम् की सौगात प्राप्त हुई।

पहले 1996 में सुजानपुर में एक छोटे से 'श्रीरामशरणम्' का निर्माण हुआ और उसका उद्घाटन 10 सितम्बर 1996 को पूजनीय महाराज जी के कर कमलों द्वारा किया गया था। तब उद्घाटन के समय पूज्य महाराज श्री ने अपने प्रवचनों में कहा, "सत्संग शुरू करने से पहले सवा करोड़ राम—नाम का जाप कर लीजिएगा। बारियाँ बांध लें, कोई बंदिश नहीं। रजिस्टर पर नोट कर लें। अवधि भी बांध लें उसी अवधि में अधिक से अधिक साधक मिलकर जाप करें। स्कूल बनते हैं पढ़ाई के लिए, मन्दिर बनते हैं पूजा के लिए, जाप के लिए। श्रीरामशरणम् भारत में और विदेशों में भी बन रहे हैं। बड़ी अच्छी बात है, लेकिन भवन बनाना ही लक्ष्य नहीं है, लक्ष्य यह है कि अशान्त व्यक्ति भी अगर इस जगह पर आता है तो उसे आते ही शान्ति मिले! जहां अशान्त को शान्ति मिले, वही स्थान श्रीरामशरणम्। राम—नाम ही सर्वोपरि, अशान्ति दूर करने वाला। अतः इतना इतना राम—नाम का जाप होना चाहिए कि यहाँ आते ही शान्ति मिले। श्रीरामशरणम् में आने पर, मानव—जन्म का जो लक्ष्य है, अपने घर, यानि परमात्मा के पास लौटने की याद आनी चाहिए। परमात्मा ही अपना घर। यहाँ आकर मन को शुद्ध करना है, निर्मल करना है। राम ही सब कुछ करने वाला है, ऐसी भावना होनी चाहिए।"

अंत में पूज्य महाराज जी ने कहा, "दो शब्द याद रखोगे तो साधना अग्रसर होगी। त्याग और भक्ति। कम — खाना, सोना और बोलना चाहिए। कम भोग—विलास करना चाहिए। मर्यादित जीवन बिताइए। कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है।"

फिर सुजानपुर में राम नाम का ऐसा प्रचार हुआ कि श्रीरामशरणम् का भवन भी छोटा पड़ने लगा। तब पूजनीय महाराज जी की आज्ञा से एक भव्य श्रीरामशरणम् का निर्माण किया गया। आखिर 14 सितम्बर 2005 को वह शुभ अवसर आ ही गया और सुजानपुर में श्रीरामशरणम् का श्री महाराज

जी द्वारा विधिवत् शुभ उद्घाटन किया गया। श्रीरामशरणम् के उद्घाटन के समय सवा करोड़ का जाप, हवन पूजन व विधिवत पूजन के साथ श्री महाराज जी के मुखारविन्द से "मंगल भवन अमंगल हारी" की धुन के साथ सम्पन्न हुआ। लगभग उस दिन 11000 लोगों ने श्री महाराज जी का आशीर्वाद व प्रसाद ग्रहण किया।

सुजानपुर श्रीरामशरणम् करीब 3000 गज में बना हुआ है। यहाँ पर 600 साधकों के बैठने की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त खुले सत्संग के लिए भी पूरी व्यवस्था है। सुन्दर फूलों की क्यारियों और बगीचे के बीच बना यह पावन धाम सब का मन मोह लेता है। सुजानपुर में पूजनीय महाराज श्री ने अपना बचपन बिताया जिसके कारण साधक भाई—बहन सुजानपुर के श्री रामशरणम् को पावन धाम मानते हैं।

हर वर्ष तीन दिन का खुला सत्संग, रोज़ सुबह श्री अमृतवाणी जी का पाठ, शाम को प्रतिदिन एक घंटे का जाप, पूर्णिमा का जाप, और सब प्रोग्राम जो दिल्ली श्रीरामशरणम् में आयोजित नियमानुसार व्यवस्थित किए जाते हैं। सभी साधक सभी दिन उत्सव की भांति अति हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

यहाँ प्रातः प्रतिदिन दैनिक सत्संग में 50—60 साधक सम्मिलित होते हैं तथा रविवार को श्री अमृतवाणी संकीर्तन व भजन तथा प्रवचन होते हैं जिसमें करीब 200—250 साधक एकत्रित हो जाते हैं। सुजानपुर में पहले ही दिन से शाम का जाप निरंतर चल रहा है। जिसमें 30—40 साधक आकर जाप कर महाराज श्री के आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सुजानपुर में महिला साधक खूब गिनती में आकर सत्संग की शोभा बढ़ाती हैं।

गुरुजनों की अपार कृपा से सब मंगल मना रहे हैं व दीक्षित साधकों की संख्या भी दिन—प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। सब गुरुजनों के आशीर्वाद से ही है। ■

गुरु कृपा ही केवलम्

सुजानपुर में श्रीरामशरणम् का उद्घाटन होना था। परम पूजनीय श्री महाराज जी का निवास स्थान रहा है। अतः हमारे मन में था उस परम पावन भूमि पर हम ज़रूर जाएँ। अतः वहाँ जाने का प्रोग्राम बना कर ट्रेन की टिकट आदि करवा ली। यह सब, श्री महाराज जी के नॉलेज में था। हमने जो ट्रेन बुक की थी, वह सुजानपुर प्रातः सुबह चार बजे पहुँचती है। उस रात जब हम ट्रेन पकड़ने के लिए अपने घर से ऑटो करके निकले, तो बहुत अधिक ट्रैफिक होने की वजह से हम रेलवे स्टेशन देर से पहुँचे और हमारी ट्रेन मिस हो गई।

हमें कहीं भी किसी गाड़ी में रिजर्वेशन नहीं मिली। फिर हमें मालूम हुआ कि एक ट्रेन जम्मू जा रही है, तो हमने उसके जनरल डिब्बे में ही बैठने का विचार बनाया। परंतु हमारे साथ बेटा और बेटी भी थे, इसलिए हम डर रहे थे कि वहाँ पता नहीं कैसा होगा और हम उसमें जाएँ या नहीं। लेकिन किसी तरह हम उस डिब्बे में चढ़ गए। जब हम अंदर गए तो टी.टी. ने अनाउंसमेंट की कि यह डिब्बा केवल आर्मी के जवानों के लिए है। हम उतरने लगे, तभी एक जवान ने मुझे कहा, “भौजाई, आप बैठो, आपको कोई नहीं उतारेगा।” उन्होंने बिटिया को अपनी सीट देकर विंडो के पास बिठा दिया और हमें जो उनके सामान के ट्रंक थे, उनके ऊपर सुविधाजनक ढंग से बिठा लिया। उन्होंने टीटी से कहा, “ये हमारे भाई भौजाई और बच्चे हैं, इसलिए ये यहीं बैठेंगे।” लगा श्री महाराज जी ने स्वयं आ कर सारा प्रबन्ध किया हो।

इस प्रकार हम श्री महाराज की अपार कृपा से सुजानपुर पहुँचे। फिर हमें श्रीरामशरणम् जाना था। श्रीरामशरणम् जाने के रास्ते में हमें एक छोटी-सी दुकान मिली। हमने सोचा कि चाय आदि पी लेते हैं। वह दुकान घर के अंदर ही थी। हमने दुकानदार से अनुरोध किया कि हमारा सामान रख लें और हमें चाय या कोई कोल्ड ड्रिंक आदि दे दें।

उन्होंने कहा, “मैं तो जा रहा हूँ जी। मेरे गुरुदेव आए हैं। मुझे उनके दर्शन करने जाना है। आपने जो करना है, कर लो। सारी दुकान खुली पड़ी है। जो खाना है, जो पीना है, ले लो और सामान अंदर सामने फ्रिज के पास रख दो। मैं तो जा रहा हूँ।”

इस प्रकार हम उनकी तीव्रता पर हैरान भी थे और प्रसन्न भी थे कि गुरुदेव की कृपा कैसी है और यहाँ साधकों में गुरुदेव के दर्शन करने के लिए कितनी उत्सुकता है। हमने अपना जो ज़रूरी काम था, वह किया, सामान रखा और हम श्रीरामशरणम् पहुँचे।

श्रीरामशरणम् में अत्यधिक लोग थे। बहुत-से साधक आ रहे थे। यूँ लगता था जैसे सागर ही उमड़ आया हो। उसके बाद बहुत ही सुंदर तरीके से सबको बैठाने की व्यवस्था की गई थी। श्रीरामशरणम् का वातावरण अतिशय सुंदर था।

बहुत बारिश हो रही थी। जब हम पहुँचे तो पूरा हॉल साधकों से भर गया था और आंगन में भी लोग बैठे थे। किसी को भी बारिश की कोई कठिनाई नहीं लग रही थी। आराम से लोग बारिश में भीगते हुए प्रेमपूर्वक श्री महाराज जी के दर्शनों का आनंद ले रहे थे। राम कृपा से सारा कार्यक्रम बहुत सुंदर तरीके से हुआ। उसके बाद प्रीतिभोज हुआ। हमारे मन में बहुत इच्छा थी कि परम पूजनीय श्री महाराज जी का जो निवास स्थान रहा है, जहाँ पर महाराज जी ने अपना बचपन बिताया है, उस जगह को देखें। तो हम परम पूजनीय श्री महाराज जी के भाई साहब के साथ पूरे सुजानपुर में घूमे। श्री महाराज जी के पुराने निवास स्थान, नए निवास स्थान, श्री महाराज जी के स्कूल में भी गए और फिर वहाँ पर पास में एक नदी है, जहाँ पर महाराज श्री तैरने के लिए जाया करते थे, वहाँ तक हम दर्शन करके आए। हमें इतना आनंद आया, ऐसे लगता था कि हम अयोध्यापुरी में घूम रहे हैं। ■

Premji Maharaj as Gudakesh!

A sadhak recounts her memories of Premji Maharaj

"Pujniya Premji Maharaj, was 'Gudakesh' - the conqueror of sleep, a title given to Arjuna by Krishna in Bhagavat Gita. Gurudev had the uncanny ability of going deep into himself, while standing just anywhere. He used to spend nights just standing outside the door of Swamiji's room in Bungalow Road. When asked to at least take a chair or stool, he declined with the comment "I may fall asleep if I sit down."

Once I was posted in Tezpur and Pujniya Premji Maharaj came to visit me. In the Tezpur Rest House I discovered for the first time that Gurudev never slept. His bed did not appear slept in and there were two chairs pulled up, one obviously to rest his feet during the long hours when he did jaap on a very long mala that might have had 1008 beads as against the usual 108.

During the Haridwar Sadhna Satsangs

of Swamiji's time, Sadhaks invariably witnessed Pujniya Premji Maharaj sitting up all night with his mala. It was known in the inner circle of devotees that Gurudev normally spent the greater part of the night in meditation and prayer. An acquaintance once saw Pujniya Premji Maharaj rise from his armchair at night. He was bowing deep and low to an unseen presence; a very large mala, (which he kept for the night), was hanging loosely from his hands."

Thus Pujniya Premji Maharaj was a Nitya Sannyasi - there was no beginning or end to the depths of his inner detachment. It was nitya, ever present, eternal. He abided in transcendence. He was a tireless, spiritual guide and healer, dedicated to service of suffering humanity, Gudakesh - a conqueror of sleep and a hidden yogi, curiously sacred. ■

मेरे प्यारे गुरुदेव - मेरे best friend

पिछले साल, 2025 में दिल्ली के श्रीरामशरणम् में मैंने राम नाम की दीक्षा ली थी। मेरे पिताजी पहले से ही दीक्षित हैं, वे मुझे गुरुजनों की महिमा और अपार प्रेम के बारे में बताते रहते हैं, जिसके कारण मेरे अन्दर गुरुदेव के प्रति विश्वास और प्यार आया और मैंने दीक्षा ली। दीक्षा के बाद मेरी कोशिश रहती कि मैं हर रविवार सत्संग में श्रीरामशरणम् आऊँ किन्तु स्कूल और पढ़ाई के कारण नहीं आ पाती। यहाँ तक कि महीने में एक बार भी नहीं जा पा रही थी। फिर मैंने अपने best friend (सबसे अच्छे दोस्त) स्वामी जी महाराज से प्रार्थना

की कि मुझे श्रीरामशरणम् जाना है और गुरुदेव से भी मिलना है। स्वामी जी महाराज की कृपा से मेरे सपने में गुरुदेव आए और कुछ ही दिनों बाद श्रीरामशरणम् बुलाया। श्रीरामशरणम् में मेरे सामने से एक माताजी जा रहीं थीं, मैंने उन्हें राम-राम बोला और उन्होंने स्नेहपूर्वक मेरे सिर और गालों को सहलाया और कहा कि सब महाराज जी की कृपा है। ऐसा लगा जैसे वह मेरे महाराज जी ही थे। इतना प्यार पाकर मेरे मन की इच्छा भी पूरी हो गयी। यह मेरे महाराज जी की कृपा और प्रेम है। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(जून से सितम्बर 2026)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में जुलाई से सितम्बर तक 160 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **तारागढ़** पंजाब में 1 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन तथा प्रवचन के पश्चात् 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **किश्तवाड़**, जम्मू व कश्मीर में 20 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन तथा प्रवचन के पश्चात् 22 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भद्रवाह**, जम्मू व कश्मीर में 21 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन तथा प्रवचन के पश्चात् 44 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। लगभग 500 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 32 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। अन्तिम दिवस 550 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **लोह**, हिमाचल प्रदेश में 23 से 24 जून तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 15 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बंगा**, पंजाब में 28 जून को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूज्य डॉ. विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **हरिद्वार** में 24 से 29 जुलाई तक व्यास पूर्णिमा व परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा जिसमें 4 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोहतक**, हरियाणा में 15 से 16 अगस्त तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **लुधियाना**, पंजाब में 30 अगस्त को विशेष अमृतवाणी एवं प्रवचन के पश्चात् 56 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रेवाड़ी**, हरियाणा में 5 से 6 सितम्बर तक दो

दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।

- **औबेदुल्लागंज**, मध्य प्रदेश में 7 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 65 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जालन्धर**, पंजाब में 13 सितम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 77 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इसमें 568 साधक शामिल हुए।
- **हीरानगर**, जम्मू व कश्मीर में 15 सितम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 98 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जम्मू** में 18 से 20 सितम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 20 सितम्बर को नाम दीक्षा भी होगी।
- **गुरदासपुर**, पंजाब में 25 से 27 सितम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 27 सितम्बर को नाम दीक्षा भी होगी।
- **हरिद्वार** में 30 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्रि साधना सत्संग होगा।

निर्माणाधीन श्री रामशरणम् की प्रगति

- **गुना**, मध्य प्रदेश में RCC का कार्य लगभग 90 प्रतिशत पूर्ण हो गया है। ईंट की चुनाई का कार्य एवं अन्य RCC का कार्य प्रगति पर है।
- **आगरा**, उत्तर प्रदेश में Pillars और दीवार उठाने का कार्य पूर्ण हो गया है और लैंटर डालने का कार्य प्रगति पर है।
- **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में खुले सत्संग के लिए बाथरूम ब्लॉक में टाइलें और सैनेटरी फिटिंग का कार्य तेजी से चल रहा है। निर्माण कार्य अक्टूबर तक पूर्ण होने की सम्भावना है।
- **मंडीदीप**, मध्य प्रदेश में सत्संग हॉल की छत का लैंटर 23 अगस्त को डल गया था। प्रथम तल पर जाप कक्ष का कार्य प्रगति पर है।
- **जालन्धर**, पंजाब में 13 सितम्बर को होने वाले खुले सत्संग के लिए महिलाओं और पुरुषों के नए बाथरूम ब्लॉक का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। ■

Sadhna Satsang (October 2026 to March 2027)

Haridwar	30 September to 3 October	Wednesday to Saturday
Haridwar (Ramayani)	11 to 20 October	Sunday to next Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Wednesday to Saturday
Kapurthala (Fazalpur)	20 to 23 November	Friday to Monday
Indore	8 to 11 January	Friday to Monday
Hansi	5 to 8 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Saturday to Tuesday

Open Satsang (October 2026 to March 2027)

Hoshiarpur	4 October	Sunday
Saylorsburg USA	8 to 11 October	Thursday to Sunday
Sujanpur	23 to 25 October	Friday to Sunday
Pathankot	31 October to 1 November	Saturday to Sunday
Kathua	07 November	Saturday
Amritsar	15 November	Sunday
Bahdurgarh	24 November	Tuesday
Melbourne (Australia)	27 to 29 November	Friday to Saturday
Jawali	29 November to 1 December	Sunday to Tuesday
Alampur	3 to 4 December	Thursday to Friday
Gwalior	5 to 6 December	Saturday to Sunday
Surat	19 to 20 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	26 to 27 December	Saturday to Sunday
Mumbai	2 to 3 January	Saturday to Sunday
Jhabua	18 to 20 January	Monday to Wednesday
Banmore MP	22 January	Friday
Bikaner	23 to 24 January	Saturday to Sunday
Pune	30 January	Saturday
Pilibanga	31 January to 1 February	Sunday to Monday
Batala	13 February	Saturday
Bilaspur	19 to 21 February	Friday to Sunday
Sardarshahar	27 to 28 February	Saturday to Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	6 to 7 March	Saturday to Sunday
Sirsa	19 to 20 March	Friday to Saturday
Delhi Holi Satsang	21 to 23 March	Sunday to Tuesday
Ratangarh	27 to 28 March	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Other Centers (October 2026 to March 2027)

Hoshiarpur	4 October	Sunday
Saylorsburg USA	8 & 11 October	Thursday & Sunday
Sujanpur	25 October	Sunday
Pathankot	1 November	Sunday
Kathua	7 November	Saturday
Amritsar	15 November	Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	22 November	Sunday
Alampur	4 December	Friday
Gwalior	6 December	Sunday
Bhopal	13 December	Sunday
Nagod	15 December	Tuesday
Surat	20 December	Sunday
Dewas	25 December	Friday
Bhiwani	26 December	Saturday
Mumbai	3 January	Sunday
Indore	10 January	Sunday
Bagh	15 January	Friday
Dahod	16 January	Saturday
Jhabua	17 January	Sunday
Vrindavan	19 January	Tuesday
Bikaner	24 January	Sunday
Faridabad	26 January	Tuesday
Pune	30 January	Saturday
Pilibanga	31 January	Sunday
Hansi	05 February	Friday
Gurgoan	08 February	Monday
Batala	13 February	Saturday
Rohtak	14 February	Sunday
Bilaspur	21 February	Sunday
Ramtirath	22 February	Monday
Sardarshahar	27 February	Saturday
Amarpatan	01 March	Monday
Jabalpur	12 March	Friday
Sirsa	18 March	Thursday
Ratangarh	27 March	Saturday

Purnima (October 2026 to March 2027)

October	26	Monday
November	24	Tuesday
December	23	Wednesday
January	22	Friday
February	20	Saturday
March	22	Monday

Naam Diksha in Shree Ramsharanam Delhi (October 2026 to March 2027)

October	11	Sunday 10.30 AM
November	8	Sunday 11 AM
December	13	Sunday 11 AM
January	17	Sunday
February	14	Sunday
March	21	Sunday

My Blooming Virtues

A virtue is a good quality that makes you a kind and wonderful person. Enjoy the following drawing and colouring activity.

1. Draw a big, beautiful flower with lots of petals in the box below.
2. Write RAM in the middle of the flower.
3. Think about all the good virtues you have (examples shared below).
4. Choose and write a different virtue on each petal.
5. Colour and decorate your flower.

Some examples of virtues are shared below.

Kind	Fair	Patient	Curious	Confident	Grateful
Honest	Caring	Respectful	Generous	Hard-working	Thoughtful
Brave	Helpful	Creative	Responsible	Forgiving	Positive



प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदे और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय-समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com

E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाइट: www.shreeramsharnam.org